# हनुमान जी की आरती (आद्य रामानन्दाचार्य रचित)

आरती कीजै हनुमान लला की । दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥१॥

जाके बल गरजे मही[१] काँपे । रोग सोग जाके सिमाँ न चाँपे[२] ॥२॥

अंजनी-सुत महा बल-दायक । साधु-संत पर सदा सहायक ॥३॥

बाँएँ भुजा सब असुर सँघारी । दहिन[३] भुजा सब संत उबारी ॥४॥

लछिमन धरनि[४] में मूर्छि पड़्यो । पैठी पताल जमकातर तोड़्यो ॥५॥

आनि सजीवन प्रान उबाड़्यो । महि सबन कै भुजा उपाड़्यो ॥६॥

गाढ़ परे कपि सुमिरौं तोहीं । होहु दयाल देहु जस मोहीं ॥७॥

लंका कोट समुंदर खाई । जात पवनसुत बार न लाई ॥८॥

लंक प्रजारि असुर सब मार्‍यो । राजा रामजि के[५] काज सँवार्‍यो ॥९॥

घंटा ताल झालरी बाजै । जगमग जोति अवधपुर छाजै ॥१०॥

जो हनुमानजि[६] की आरति गावै । बसि बैकुंठ परमपद पावै ॥११॥

लंक बिधंस कियो रघुराई । रामानन्द (स्वामी) आरती गाई ॥१२॥

सुर नर मुनि सब करही[७] आरती । जै जै जै हनुमान लाल की ॥१३॥

[रामानन्द की हिन्दी रचनाएँ, संपादक स्व. डा. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी (चैत्र रामनवमी संवत् २०१२ प्रथम संस्करण ) पृष्ठांक ७ से साभार उद्धृत ।]

पाठान्तर :-१. भर ते महि २. जाकी सिमा न बाँधै ३. दाहिन ४. धरति ५. राम कै ६. हनुमान जी ७. करहिं {रामानन्द साहित्य तथा हिन्दी साहित्य पर उसका प्रभाव, डा बदरी नारायण श्रीवास्तव द्वारा हिन्दी परिषद्, प्रयाग विश्वविद्यालय को प्रस्तुत डी. फिल. थीसिस का परिवर्धित और संशोधित रूप पृष्ठ सं १३९}

इस पद को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, डा श्याम सुन्दर दास, सर ग्रियर्सन, डा रामकुमार वर्मा आदि सभी विद्वान् रामानन्द कृत ही मानते हैं ।

# हनुमान जी की आरती (प्रचलित)

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्टदलन रघुनाथ कला की ॥१॥

जाके बल से गिरिवर काँपे। रोग-दोष जाके निकट न झाँपे ॥२॥

अंजनी-पुत्र महा बल-दाई। संतन के प्रभु सदा सहाई ॥३॥

दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सीय सुधि लाये ॥४॥

लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई ॥५॥

लंका जारि असुर संहारे। सियारामजी के काज सँवारे ॥६॥

लछिमन मूर्छित पड़े सकारे। आनि सजीवन प्रान उबारे ॥७॥

पैठी पताल तोरि जम-कारे। महि रावन कै भुजा उखारे ॥८॥

बाँएँ भुजा असुर दल मारे। दहिन भुजा संत जन तारे ॥९॥

सुर नर मुनि आरती उतारे। जै जै जै हनुमान उचारे ॥१०॥

कंचन थार कपूर लौ छाई। आरति करत अंजना माई ॥११॥

जो हनुमान(जी) की आरति गावै। बसि बैकुंठ परमपद पावै ॥१२॥